Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

गीताञ्जलिः गीतिकाव्य में राष्ट्रिय चेतना का शंखनाद

डॉ0 रश्मि यादव
सहायक आचार्य, संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्य भाषा विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ0प्र0।

Article Info

Accepted : 01 April 2025

Published : 12 April 2025

Publication Issue :

March-April-2025

Volume 8, Issue 2

Page Number : 144-149

शोधसार : संस्कृत-साहित्य की उत्कृष्ट रचनाधर्मिता आदिकाल से आज तक निरन्तर प्रवाहमान एवं जीवन्त बनी हुई है। आधुनिक संस्कृत साहित्यकार पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी ने राष्ट्रिय-चेतना एवं राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत अपनी कृति गीताञ्जलिः में राष्ट्रिय-चेतना, सर्वोदय, पर्यावरण, आतंकवाद एवं संस्कृत भाषा के गौरव जैसे विषयों को गीत के माध्यम से अभिव्यक्त करते हुए राष्ट्रहित में बीस सूत्री कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे कपिलदेव द्विवेदी काराष्ट्र-प्रेम उनके गीतों में प्रस्फुटित हुआ है। राष्ट्र को समर्पित उनके गीत प्रबुद्ध जनों तक पहुँचकर राष्ट्रिय भाव को उद्वेलित करने में समर्थ हैं। गीताञ्जलिः में गीतों को सात भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में भक्ति भाव से सम्पृक्त गीत आबद्ध हैं। द्वितीय भाग में मातृवन्दना और तृतीय भाग में धर्मपरक गीत हैं। चतुर्थ भाग में राष्ट्रिय और सामाजिक विषयों के गीत,पञ्चम भाग में महापुरुषों के जीवन पर आधारित गीत, षष्ठ भाग में प्रकृतिपरक और अन्तिम सप्तम भाग में विभिन्न विषयों से संबंधित गीत संकलित किये गये हैं। इस गीतिकाव्य के अनेक गीतों में राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग का पवित्र भाव अनुस्यूत है।

बीजशब्द - भारत, राष्ट्र-वन्दन, देशप्रेम, सर्वोदय, आतंकवाद, प्रदूषण।

प्रस्तावना– आदिकवि वाल्मीकि द्वारा प्रवर्तित संस्कृत काव्यधारा की समृद्ध परम्परा को संरक्षित एवं संवर्धित करने के लिए संस्कृत के आधुनिक कवि सतत् प्रयत्नशील हैं। समकालीन संस्कृत कवियों की सुदीर्घ श्रृंखला में पं0 क्षमाराव, वेंकट राघवन, उमाशङ्कर त्रिपाठी,सत्यव्रत शास्त्री, रमाकान्त शुक्ल, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, रेवा प्रसाद द्विवेदी, हर्षदेव माधव आदि प्रमुख हैं। इनमें से अनेक विद्वानों ने वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को अपने रचना-संसार का विषय बनाते हुए संस्कृत साहित्य को नवीन दिशा प्रदान की है। इस परम्परा में काव्य-प्रतिभा के धनी डॉ0 द्विवेदी ने महाकाव्य, खण्डकाव्य और गीतिकाव्य जैसी विधाओं पर लेखनी चलाते हुए अस्सी से अधिक मौलिक ग्रंथों का प्रणयन किया, जिनमें आत्मविज्ञानम् महाकाव्य, राष्ट्रगीताञ्जलिः, भक्ति कुसुमाञ्जलिः, शान्तिस्तोत्रम्, महाप्रयाणम्, संस्कृत कविहृदयम्, दर्शना चरितम् जैसे महाकाव्य प्रशंसनीय हैं। कपिलदेव द्विवेदी द्वारा विरचित 'गीताञ्जलिः' नामक गीतिकाव्य न केवल उनके हृदयस्थ भावों का उन्मेष है, अपितु वर्तमान युग का प्रतिबिम्ब भी है। युगबोध की दृष्टि से यह गीतिकाव्य प्रासंगिक है। कपिलदेव द्विवेदी के गीत इस मिथक को मिथ्या सिद्ध करते हैं कि संस्कृत भाषा के साहित्यकार पारम्परिक विषयों तक ही केन्द्रित हैं।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

उपोद्घात- कपिलदेव द्विवेदीभारत की समसामयिक स्थिति से प्रेरित होकरगीताञ्जलि: में राष्ट्रिय–चेतना को जाग्रत करने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रिय चेतना विषयक गीतों में ***भारतं तं नुमो भारतं तं नुम:, भारत-राष्ट्र-वन्दनम्, देशानुराग: परमोऽनुराग:, राष्ट्र कुसुमाञ्जलि:*** दर्शनीय हैं। 'भारतं तं नुमो भारतं तं नुम:' गीत में भारत के स्वर्णिम अतीत के माध्यम से राष्ट्रिय भावना का शंखनाद किया गया है। पाश्चात्य संस्कृति को श्रेष्ठ मानकर उसका अन्धानुकरण करने की प्रवृत्ति के कारण सुषुप्त होते जा रहे राष्ट्रप्रेम के भाव को जागृत करने के लिए राष्ट्र–गौरव का बोध आवश्यक है। एतदर्थ गीताञ्जलि: के गीत प्रासङ्गिक हैं, जिनके माध्यम से भारत की महान् और विराट संस्कृति का अभिज्ञान कराया गया है। डॉ0 द्विवेदी गीतों के माध्यम से यह उद्घोषणा करते हैं कि भारत एक ऐसा देश है, जहाँ वेदवाणी अपवित्र विचारों का परिष्कार करके पवित्रता का संचार करती है औरशास्त्रीय चर्चाएँ चञ्चल मन को आकृष्ट करके उसे आत्मबल से सम्पृक्त करती हैं, वहीं वेदान्त विद्या अर्थात् औपनिषदिक् दार्शनिक चिन्तन व्यक्ति को अमृत अर्थात् मोक्ष की ओर अग्रसर करता है।[1] इन गीतों में भारतीय ज्ञान परम्परा का बखान करते हुए गौरव–बोध कराने का प्रयत्न किया गया है।

श्रेष्ठ राष्ट्र की अवधारणा मूल्यपरक सामाजिक व्यवस्था के अभाव में दिवास्वप्न ही है। जीवनमूल्यों के पतन से व्यक्ति निराशा, कुण्ठा और हीनभावना से ग्रस्त हो जाता है। उदारता एवं परोपकार की अपेक्षा स्वार्थ एवं स्वहित की संकीर्ण मानसिकता प्रबल हो जाती है। ऐसी स्थिति में डॉ0 द्विवेदी के गीत भारतीयों को 'सत्यं शिवं सुन्दरं' – इस शाश्वत मूल्य का स्मरण कराते हैं और यह सन्देश देते हैं कि यहाँ वीरों की पूजा होती है। किन्तु वीरता परहित में प्रयुक्त होकर ही चरितार्थ होती है, न कि स्वार्थ में; क्योंकि भारतीय संस्कृति का आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकं' है।[2] भारतीय संस्कृति प्राणिमात्र से प्रेम करने का सन्देश देती है।यह गीत ईशावास्योपनिषद् के उस मंत्र से प्रेरित है, जिसमें सभी प्राणियों में परमतत्त्व का अंश देखते हुए किसी से भी घृणा न करने का उपदेश दिया गया है–**"यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति । सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते"।**[3] गीतांजलि के गीत सभी के प्रति संवेदनशील और न्यायशील होने की प्रेरणा देते हैं ।'देशानुराग: परमोऽनुराग:' गीत के माध्यम से भी मूल्यों की स्थापना का प्रयत्न किया गया है। कवि कहते हैं– "उस व्यक्ति का जन्म लेना ही सार्थक है, जिसमें देश की रक्षा, जनता की समृद्धि, परोपकार–वृत्ति, परहित–चिन्तन और निम्न वर्गों के प्रति अनुराग है।[4]

भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत समृद्ध एवं प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है। 'गीताञ्जलि:' में डॉ0 द्विवेदी इसी विशिष्टता का बोध कराते हुए कहते हैं कि इस भूमि को गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, सिन्धु, व्यास और नर्मदा जैसी पवित्र नदियाँ सिञ्चित करके उपजाऊ बनाती हैं।[5] हिमालय, विन्ध्य पर्वत, अरावली, सत्पुड़ा, सह्यगिरि जैसी पर्वत श्रृंखलाएँ प्रहरी सम इसकी रक्षा करती हैं। ज्ञान की नगरी काशी, काञ्ची, वृन्दावन, तीर्थराज संगम तथा नालन्दा इसकी ज्ञानधारा की प्रखरता की प्रतीक हैं।[6] इस दृष्टि से इस भूमि में जन्म प्राप्त करना सौभाग्य का प्रतिफल समझना चाहिए। सम्भवत: इसी कारण राम, कृष्ण, बुद्ध, वशिष्ठ, वाल्मीकि, गौतम, जैमिनी, कणाद जैसे महापुरुषों[7] एवं सीता, राधा, गार्गी, विद्योत्तमा जैसी नारियों[8] ने इसे अपनी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि बनाया तथा अपने कर्म एवं विचार से सम्पूर्ण जगत् को मानवता का सन्देश दिया। ऐसे महान् देश को शत् शत् प्रणाम करते हुए डॉ0 द्विवेदी ने कहा है– **"नमामि राष्ट्र भारतम्"**।[9] कपिलदेव का मातृभूमि के प्रति यह उद्गार**"माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:"**[10] इस अथर्ववैदिक भाव से अनुप्राणित हुआ है।

भारत की गौरवशाली विरासत को गीतों की माला में अनुस्यूत करके डॉ0 द्विवेदी ने देश के प्रति हार्दिक प्रेम एवं त्याग के भाव को जाग्रत करने का प्रयास किया है। 'देशानुराग: परमोऽनुराग:' गीत देशभक्ति से अनुप्राणित है। इन गीतों में

यह सन्देश अन्तर्निहित है कि जिसमें देश के गौरव की भावना नहीं है, जिसमें देश की कीर्ति का अभिमान नहीं है, जिसमें देश के प्रति प्रेम और भक्ति नहीं है, वह मनुष्य अधम और पशुवत् है। जिसमें देश के उद्धार की भावना नहीं है, मातृभूमि की चिन्ता नहीं है, राष्ट्र के प्रति बलिदान–भाव नहीं है, उसका जीवन श्मशान तुल्य है–

न यत्र देशोद्धृतिकामनाऽस्ते न मातृभूमेर्हितचिन्तनं च।

न राष्ट्ररक्षा बलिदान भावः शमशानतुल्यं नरजीवनं तत् ।।[11]

"यस्मिन् स्वदेशस्य न गौरवः स्यात् न चाभिमानो निजदेश कीर्तेः।

नराधमोऽयं नृ पशुर्मतो मे स्वदेशभक्त्या रहितो हितोऽपि।।[12]

मनुष्य के लिए राष्ट्र के प्रति बलिदान–भाव, राष्ट्र–कल्याण के लिए प्रयत्न, राष्ट्र की समृद्धि हेतु चिन्ता जीवन की प्रथम अभिलाषा होनी चाहिए।[13] जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपने जीवन के उत्सर्ग का व्रत किया है, जिन्होंने अपने प्राण त्याग दिये, शान्ति और क्रान्ति का व्रत लिया– वे देवतुल्य हैं और अजर–अमर हैं।"[14] कवि कहता है मातृभूमि, राष्ट्र एवं जनता के लिए न केवल प्राणों का अर्पण, अपितु अपना सर्वस्व अर्पण कर देना, जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए।[15] राष्ट्र के लिए नश्वर शरीर का दान करना लाभकारी है, क्योंकि इससे शाश्वत कीर्ति की प्राप्ति होती है।[16]

डॉ0 द्विवेदी ने 'हुतात्मनः' गीत में देश के प्रति आत्मोत्सर्ग को 'परमं ज्योति' की संज्ञा देते हुए आत्मबलिदानियों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है"।[17] इस गीत में त्याग एवं समर्पण की शिक्षा देते हुए कहा गया है कि यदि देश की समृद्धि एवं स्वतंत्रता को क्षति पहुंचे, जनता का शोषण होने लगे तो देश की स्वतंत्रता के लिए हर संभव यत्न करना चाहिए और एतदर्थ आत्म–त्याग भी करना पड़े, तो वह भी श्रेयस्कर है।[18]

डॉ0 कपिल देव द्विवेदी राष्ट्रभक्त कवि होने के साथ ही राजनीति के मर्मज्ञ भी थे। 'लोकतन्त्रम्' गीत में उन्होंने लोकतंत्र पद्धति एवं उसके लाभ को प्रकट करते हुए लोकतंत्र को देश की उन्नति एवं प्रगति के लिए आवश्यक माना है। लोकतंत्र को हित, सुख, समृद्धि और शुभ का साधन कहा है–

"लोकतत्रं हितं लोकतन्त्रं सुखं लोकतन्त्राश्रया वृत्तिरिष्टा जने।

लोकतन्त्रे जनानां समृद्धिः शुभा लोकतन्त्रे जनानां विवृद्धिः ध्रुवा"।।[19]

उनकी यह अनुभूति कि 'लोकतंत्र ही सुख का एकमात्र मूल है तथा लोकतंत्र शान्ति संस्थापक है, आज पूर्णतः चरितार्थ है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य पर दृष्टिपात करने से स्पष्टतः ज्ञात होता है कि जिन राष्ट्रों में लोकतंत्र नहीं है, वहाँ राजनीतिक स्थिति चिन्ताजनक है। उनका मत कि 'लोकतत्रं भजे' आज सर्वाधिक गृहणीय है।

राजनीति के सूक्ष्म सिद्धान्तों के ज्ञाता डॉ0 द्विवेदी स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। उनका जन्म (6.12.1918) परतंत्र राष्ट्र में हुआ था। उन्हें परतन्त्रता के कष्ट का व्यावहारिक अनुभव था। राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपने पिता के तुल्य वे भी संघर्ष करते रहे। स्वतंत्रता के प्रति उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति 'गीताञ्जलिः' के 'स्वातन्त्र्य गौरवं' एवं 'स्वाधीनता' नामक गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। डॉ0 द्विवेदी का 'स्वातन्त्र्य गौरवं' गीत स्वतंत्रता और परतंत्रता के मध्य अन्तर को स्पष्ट करता हुआ स्वतंत्रता की रक्षा का सन्देश देता है। उनके अनुसार, स्वतंत्रता की प्राप्ति से ही सुख, लोक में सम्मान, कीर्ति एवं आनन्द की प्राप्ति होती है तथा भय का नाश होता है। स्वतंत्रता के बिना जीवन कष्टकारी और दुःखों से पूर्ण होता है तथा विकास का अभाव होता है। स्वतंत्रता के बिना जीवन मृत्यु–तुल्य होता है। स्वतंत्र भारत राष्ट्र की कामना करते हुए वे कहते हैं–

"सदा भारते ते कृपा संतता स्यात् त्वदर्चापरा भारतीया भवेयुः।
विहाय स्वकं स्वार्थजातं जघन्यं मुदा जीवनं तेऽर्पयेयुः पदाब्जे।।"[20]

डॉ0 द्विवेदी की सामाजिक विचारधारा 'गीताञ्जलिः' में प्रस्फुटित हुई है। वे युगद्रष्टा थे और इस तथ्य से भली-भाँति अवगत थे कि सामाजिक संगठन सुचारु रूप से तभी संचालित एवं सुव्यवस्थित हो सकता है, जब समाज में सभी वर्गों को उन्नति एवं कल्याण के समान अवसर सुलभ हों। आपका 'सर्वोदयः' गीत इसी भाव से ओत-प्रोत है। इस गीत में यह सन्देश निहित है कि दीन-दुःखियों की उन्नति, लोकहित एवं जनता की समृद्धि के लिए सर्वोदय आवश्यक है। इससे शोषित और विकलजनों की रक्षा हो सकेगी"।[21] इसके लिए कटुता, वैषम्य और विभिन्न प्रकार के विभेद को उपेक्षित करके समता का प्रसार करना होगा।[22] इस गीत के माध्यम से आपने जाति, भाषा, प्रान्त एवं वर्ग के आधार पर भेद-भाव का त्यागकर राष्ट्रहित में एकजुट होकर कार्य करने का निर्देश दिया है।[23] इनका 'सर्वोदयः' गीत मूल्यों की पाठशाला-सी प्रतीत होती है। इसमें आचार-शुद्धि, व्यवहार-शुद्धि एवं गुणकर्म-शुद्धि पर बल दिया गया है।[24] आपने सर्वोदय के लिए 'परहित' को आवश्यक मानते हुए कहा है- **"स्वार्थ विहाय परमार्थरतिश्चकास्तु"** (श्लोक-4) एवं **"त्यागे रतिः परहिते परमोऽनुरागः"** (श्लोक-5)। इस गीत में यह निर्देश भी दिया गया है कि दीन, अनाथ और विधवा के प्रति करुणा होनी चाहिए- **"दीनेष्वनाथ निवहे विधवादि दुःखे कारुण्य दृष्टिरिह शस्यत एवं शाश्वत्"।।**[25]

डॉ0 द्विवेदी की सर्वोदय की यह भावना मात्र स्वराष्ट्र की सीमा तक आबद्ध न थी। वे सम्पूर्ण विश्व की शान्ति एवं कल्याण के चिन्तक थे। आज विश्वशान्ति एक महत्त्वपूर्ण समस्या बनी हुई है, जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अन्तरराष्ट्रीय संगठन प्रतिक्षण तत्पर हैं, तथापि अनेक राष्ट्र अपनी प्रभुत्ववादी विचारधारा के कारण परस्पर युद्ध में संलग्न हैं। अनेक राष्ट्र गृहयुद्ध, विद्रोह एवं आतंकवाद का दंश झेलने के लिए विवश हैं। यह स्थिति सम्पूर्ण विश्व के लिए चिन्ताजनक है। इस वैश्विक परिदृश्य में भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकं' की भावना ही सवर्वोत्तम मार्ग है। डॉ0 द्विवेदी का 'वसुधैव कुटुम्बकं' गीत इसी सद्भावना से सम्पृक्त है। इस गीत में आपने द्वेष-बुद्धि, स्वार्थ-बुद्धि, भेद-बुद्धि एवं लोभ-बुद्धि को शान्ति का अवरोधक मानते हुए[26] विश्व-बन्धुत्व की भावना को श्रेय एवं प्रेय माना है"।[27]

आज आतंकवाद विश्व शान्ति के मार्ग में सर्वाधिक अवरोधक सिद्ध हो रहा है। आतंकवाद की समस्या न केवल भारत, अपितु अमेरिका, रूस, आस्ट्रेलिया, फ्रांस जैसे शक्तिशाली राष्ट्रों के लिए एक गम्भीर चुनौती बनकर उभरी है। डॉ0 द्विवेदी ने 1993 ई0 में इस समस्या के घातक परिणामों और उसके निवारण के उपायों को अपने गीत 'आतंकवादः तन्निरोध च' में प्रस्तुत किया, जो उनके दूरदर्शी होने का प्रमाण है। उन्होंने आतंकवादियों को 'यमदूत' की जो संज्ञा दी है, वह आई0एस0आई0एस0, लश्कर-ए-तोयबा, तालिबान, हमास, बोको हरम जैसे आतंकवादी संगठनों के संदर्भ में सत्य सिद्ध हो रहा है। आतंकवादियों के विषय में उनका यह विचार सर्वमान्य है कि आतंकवादियों का न तो कोई धर्म होता है और न गुण या चरित्र।[28] वे रक्त-पिपासु होते हैं और जगत् का शोषण करना उनका एकमात्र ध्येय होता है।[29] जघन्य कृत्य और दुराचरण ही उनका धर्म है।

डॉ0 द्विवेदी का मत है कि आतंकवाद के विनाश के लिए कठोर उपाय किये जाने चाहिए। उन्होंने एतदर्थ रुद्र-स्वरूप के वरण को उचित माना है- **"आतंकवादस्य विनाशनाय रुद्रस्वरूपं वरणीयमेव।"**[30] आतंकवादियों को देशद्रोही मानते हुए उनके नाश को 'धर्म' तथा 'परम ईश भक्ति' कहा है।[31] उनकी यह उद्घोषणा **"आतंकवादस्य प्रणाश एवं देशस्य विश्वस्य हिताय मन्ये"**[32] आज सम्पूर्ण विश्व के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है।

युगद्रष्टा एवं राष्ट्रभक्त डॉ0 कपिल देव द्विवेदी पर्यावरण के प्रति भी संवेदनशील थे। उनकी रचना 'प्रदूषण समस्या' पर्यावरण के प्रति ध्यान आकृष्ट करती है। वे प्रदूषण-समस्या के व्यापक दुष्परिणामों को निरूपित करते हुए कहते हैं- "आज सम्पूर्ण विश्व प्रदूषण की समस्या से शोषित है। जल, आकाश, पृथ्वी, वन एवं समुद्र- सभी दूषित हो चुके हैं।[33] प्राण-पोषक वायु के प्रदूषित होने का प्रमुख कारण है- वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई।[34] इसी प्रकार, जल में मल एवं रासायनिक पदार्थों का प्रक्षेपण जल को प्राणघातक स्तर तक प्रदूषित कर रहा है। कीटनाशक दवाएँ एवं रासायनिक खाद के कारण भूमि की उर्वरता क्षीण हो रही है।[35] वर्तमान में सर्वत्र प्रदूषण की समस्या विकट रूप में दृष्टिगोचर हो रही है। फलस्वरूप जीवधारियों का जीवन संकटापन्न है। इसके निवारणार्थ वृक्षारोपण अत्यावश्यक है। वृक्ष कार्बन-डाई-आक्साइड गैस रूपी विष को अवशोषित करके ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।[36]

उपसंहार- बीसवीं शताब्दी के अभूतपूर्व लब्धप्रतिष्ठ तथा संस्कृत साहित्य के अनुपम रत्न पद्मश्री डॉ0 कपिल देव द्विवेदी ने 'गीताञ्जलि:' के गीतों के माध्यम से आधुनिक युग की अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय व प्रेरक प्रयास किया है। इनके गीतों में राष्ट्रीय भावना पूर्णत: मुखरित हुई है, साथ ही, राष्ट्रीय भावना का एक प्रबल स्वर इनके काव्य में दृष्टिगोचर होता है। सामाजिक चेतना, पर्यावरण और सर्वोदय जैसे अन्य विषय भी इनको अत्यन्त प्रिय थे। इन गम्भीर विषयों को सुरीले गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की उनकी कला अद्वितीय है। 'गीताञ्जलि:' में नयी प्रवृत्तियों एवं नवीन चेतना के साथ-साथ समसामयिक घटनाओं का यथार्थ अनुभव की प्रामाणिकता के साथ वर्णन करते हुए उसके प्रति गहरी संवेदना प्रकट की गयी है। 'गीताञ्जलि:' सम्पूर्ण विश्व में हो रहे सामाजिक, राजनैतिक एवं नैतिक परिवर्तनों की साक्षी है।

सन्दर्भसूची

1. यत्र वेदध्वनि: पापसंहारक:, यत्र शास्त्रादिचर्चा मनोमोहनी।
   यत्र वेदान्तविद्या सुधादायिनी, भारतं तं नुमो भारतं तं नुम:।। गीताञ्जलि:, भारतं तं नुमो भारतं तं नुम:,श्लोक-1
2. यत्र सत्यं शिवं सुन्दरं राजते, यत्र धर्मार्चना वीरपूजा सदा।
   यत्र विश्वं कुटुम्बं मतं श्रेयसे, भारतं तं नुमो भारतं तं नुम: ।। वही, श्लोक-2
3. ईशावास्योपनिषद् 6
4. देशस्य रक्षा जनता-समृद्धि: परोपकाराश्रयणेन वृत्ति:।
   परार्थचिन्ता पतितानुरागो येष्वस्ति तेषां जनिवेर धन्या।। गीताञ्जलि:, देशानुराग: परमोऽनुराग:,श्लोक-2
5. यत्र गंगा नदी यत्र कालिन्दिका यत्र गोदा च कृष्णा च कावेरिका।
   यत्र सिन्धुर्विपाशा शुभा नर्मदा भारतं तं नुमो भारतं तं नुम: ।। गीताञ्जलि:, भारतं तं नुमो भारतं तं नुम:, श्लोक-3
6. वही, श्लोक 9, 10, 11
7. यत्र रामश्च कृष्णश्च विश्वात्मनौ यत्र बुद्धोवशिष्ठश्च वाल्मीकज:।
   गौतमो जैमिनि: श्रीकाणादो मुनि: भारतं तं नुमो भारतं तं नुम:।। वही,श्लोक-4
8. वहीं, श्लोक,6
9. गीताञ्जलि:, भारत-राष्ट्र-वन्दनम्, श्लोक-1, नमामि राष्ट्र भारतं
10. अथर्ववेद 12.1.12
11. गीताञ्जलि:, देशानुराग: परमोऽनुराग:, श्लोक-1
12. वही, श्लोक -4

13. राष्ट्रस्य हेतोर्बलिदानभावो राष्ट्रस्य कल्याण–विर्धा प्रयत्न:।
    रात्रिन्दिवं राष्ट्र समृद्धि चिन्ता स्याज्जीवनस्य प्रथमोऽभिलाष:।। गीताञ्जलि:, देशानुराग: परमोऽनुराग:, श्लोक–6
14. स्वजीवनोत्सर्ग व्रता अजस्त्रं प्राणन् जहुर्ये निजराष्ट्रहेतो:।
    शान्तेश्च क्रान्तेश्च व्रतं चरन्त: त एव देवा अमरा: सुराश्च।। वही, श्लोक–9
15. गीताञ्जलि:, देशानुराग: परमोऽनुराग:, श्लोक–10
16. वही, शलोक–3
17. गीताञ्जलि:, हुतात्मन:, श्लोक– 6
18. यदा यदा देश समृद्धि नाश: स्वातन्त्र्य नाशो जनशोषणं च।
    तदा तदा देश स्वतंत्रतार्थं हुतात्मनामत्र शुभोऽवतार: ।। गीताञ्जलि:, हुतात्मन:, श्लोक–7
19. गीताञ्जलि:, लोकतन्त्रम्, श्लोक–1
20. गीताञ्जलि:, स्वातंत्र्य–गौरवम्, श्लोक–8
21. दीनोद्धृतौ जनहिते जनता समृद्धौ राज्यस्य विज्ञनिवहस्य च वृत्तिरस्तु।
    संशोषितस्य विकलस्य च रक्षणं स्यात् स्वार्थं विहाय परमार्थरतिश्चकास्तु ।। गीताञ्जलि:, सर्वोदय:, श्लोक–4
22. वही, श्लोक –2
23. जात्यादि भेदमपहाय विहाय भाषा प्रान्तादिभेदमवमत्य च वर्गभेदम्।
    राष्ट्रोन्नतौ कृतधियो विदुषां वरेण्या: संसाधयन्तु निजदेशहितं समृद्ध्यै ।। वही, श्लोक–9
24. वही, श्लोक–3
25. गीताञ्जलि:, सर्वोदय, श्लोक–5
26. द्वेषबुद्धि: सदा तापसंचारिणी स्वार्थबुद्धि: सदा शान्ति संहारिणी।
    भेदबुद्धि: सदा स्नेह संहारिणी लोभबुद्धि: सदा दु:ख संचारिणी।। गीताञ्जलि:, वसुधैव कुटुम्बकम्,श्लोक–3
27. विश्वबन्धुत्व मन्त्र: सदा श्रेयसे विश्वबन्धुत्व शक्ति: सदा प्रेयसे। वही,श्लोक–10
28. नात्रास्ति धर्मो न गुणो न शीलं नापेक्षितो वा शुचितानुराग:।
    संशोषणं भूषणमत्रं चौर्यं क्रौर्यं हि शौर्यं धन लोलुपत्वम् ।।गीताञ्जलि:, आतंकवाद: तन्निरोधश्च, श्लोक–3
29. क्षुधानिवृत्ति: परशोणितेन शोष्यं जगद् वर्तत एव लक्ष्यम्। वही, श्लोक–5
30. वही, श्लोक–10
31. देशद्रुहां नाशनमेव धर्म: दुरात्मनाश: परमेशभक्ति:। वही, श्लोक–11
32. वही, श्लोक–12
33. प्रदूषणं प्रदूषणं समस्त विश्व शोषणम्।
    जलं नभ: स्थलं वनं समुद्र वारि दूषणम् ।। गीताञ्जलि:, प्रदूषण–समस्या, श्लोक–1
34. तरोर्वनस्य छेदनं प्रधानमत्र कारणम्। वही, श्लोक–3
35. रसायनेन संयुतं समं पदार्थजातकम्।
    इमे च कीटनाशका: द्रवास्तु भूमि दूषका: ।। गीताञ्जलि:, प्रदूषण–समस्या
36. तरोर्वनस्य रोपणं वनस्पतेर्विवर्धनम्। विष प्रभाव रोधकं वनादि वर्धनं मतम् ।। वही, श्लोक–11